माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा की समस्या पर एक अध्ययन

Ajay Kumar Gupta, Research Scholar
Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore, M.P.

Dr. Dheeraj Shinde, Associate Professor
Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore, M.P.

प्रायः तीन प्रकार के तथ्यों का वर्णन शास्त्रों में मिलता है। मातृऋण–पितृ ऋण एवं गुरू ऋण लेकिन अपने विकास में तथा महान काव्यों की रचना में मातृ ऋण को स्वीकार किया है। अरस्तु के शब्दों में ''मुझे 60 योग्य मातायें दीजिये मैं एक सफल राष्ट्र दे दूगाँ। माता ही बचपन में जिन गुणों का बीज बो देती है वही रास्ता हो बचपन में जिन गुणों का बीच वो देती है वही आगे चलकर अंकुरित एवं पल्लवित होता है। यदि पुरूष और स्त्री दोनों में से किसी एक को शिक्षा का अवसर देना चाहिए क्यों कि पुरूष की शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948) ने लिखा है– ''शिक्षित स्त्रियों के बिना शिक्षित व्यक्ति नहीं हो सकतें। यदि सामान्य शिक्षा पुरूषों या स्त्रियों तक सीमित रखी जाती हैं तो स्त्रियों को भी शिक्षा प्राप्ता करने का अवसर दिया जाना चाहिए क्यों कि ऐसी दशा में शिक्षा को अन्य पीढ़ी को हस्तान्तरित किया जा सकेगा।''

यत्र पूज्यन्ते नारि, तत्र रमन्ते देवताः

उपर्युक्त कथनों से स्पष्ट हो रहा है कि अशिक्षा के कारण स्त्रियों में छिपी हुई प्रतिभायें अविकसित रह जाजी हैं। शिक्षा के अभाव में वे घर के भीतर सीमट कर रह जाती है तथा अनेक प्रकार से कुंठा का शिकार हो जाती

है। शिक्षा के अभाव में घर के भीतर सिमटकर रहने के कारण उनका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से भी वह पीछे रह जाती है। राष्ट्रीय औश्र अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भी महिलायें बहुत पीछे हैं। ये सभी समस्यायें शिक्षा के अभाव के कारण ही हैं।

आज विश्व में महिला जागरण अभियान चल रहा है लेकिन समस्या इस बात की है कि महिलाओं को किस प्रकार से जागृत किया जाय। यह कार्य शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। शिक्षा व्यवस्था कई स्तरों पर विभाजित है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण स्तर माध्यमिक स्तर है इसी स्तर के बाद महिलायें या घरेलू कार्य का बोझ उठाती है या विभिन्न व्यवसायों में लग जाती है और अपने वास्तविक जीवन की शुरूआत करती हैं। स्त्री शिक्षा की आवश्यकता को सबने स्वीकार किया है। स्त्री शिक्ष की इतनी महत्ता होते हुए भी स्त्रियों की शिक्षा में अनेक प्रकार की बाधायें हैं। स्त्रियाँ माध्यमिक स्तर तक पहुँच नहीं पाती यदि पहुँच भी जाती है तो बीच में ही शिक्षा छोड़ देती है। जिनके कारण स्त्री शिक्षा बाधित होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में इन्हीं समस्याओं को खोजने का प्रयास किया गया है। ये समस्यायें प्रमुख रूप से दो प्रकार सेउभर कर सामने आयी है।

1. मनोवैज्ञानिक समस्यायें।
2. सामाजिक समस्यायें।

माध्यमिक स्तर पर छात्रायें अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याओं से ग्रस्त रहती है जैसे प्रेरणा का अभाव सहशिक्षा, समायोजन की समस्या, मानसिक अस्वस्थता, हीनभावना, ग्रामीण मानसिकता, संकुचित मानसिकता, सावेगिता,

माता–पिता का बालिका शिक्षा के प्रति संकुचित दृष्टिकोंण आदि ऐसे मनोवैज्ञानिक कारण है जिनके कारण स्त्री शिक्षा प्रभावित होती है। इन मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर जाति, धर्म, परिवार के स्वभाव, निवास स्थान, पिता का व्यवसाय आदि का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। मनोवैज्ञानिक समस्याओं के अतिरिक्त माध्यमिक स्तर पर तमाम सामाजिक समस्यायें भी स्त्री को बाधित करती है, जैसे घरेलू कार्य का बोझ, माता–पिता छात्राओं की शिक्षा के प्रति

उदासीनता, बाल–विवाह, अप्रत्यय एवं अवरोधन, आर्थिक विषमता, बालिकाओं की शिक्षा के प्रति संकुचित दृष्टिकोण, धर्मान्धता, पर्दाप्रथा सरकार की उपेक्षा परिवार में सम्मानजनक स्थान प्राप्त नहोना, परिवार में भाई एवं बहनों की परिवारिक स्थिति में विभेद आदि ऐसे अनेको सामाजिक कारक हैं जिससे माध्यमिक स्तर पर स्त्री शिक्षा प्रभावित होती है। सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्यायें समान रूप से सभी महिलाओं में नहीं पायी जाती है। यह समस्यायें विभिन्न जातियों, धर्मों व्यवसायों परिवार के स्वरूपों एवं ग्रामीण और शहरी इत्यादि बिन्दुओं पर अन्तर रखती हैं। विभिन्न स्तरों पर यह समस्यायें स्त्री शिक्षा को किस प्रकार प्रभावित क रती है। और किस मात्रा में प्रभावित करती है। इस अध्ययन में इन्ही बिन्दुओं पर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इन्हीं समस्याओं की जानकारी के लिये इस अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

अध्ययन क उद्देश्य–

1. प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर स्त्री शिक्षा की मनोसामाजिक समस्याओं को ज्ञात करना।

2. सामाजिक समस्याये (माध्यमिक स्तर पर) जैसे घरेलू कार्य का बोझ, माता–पिता की उदासीनता, असुरक्षा की भावना, आर्थिक विपन्नता, रूढ़िवादिता आदि किस प्रकार एवं किस सीमा तक स्त्रियों की शिक्षा को प्रभावित करती है इसे ज्ञात करना है।
3. माध्यमिक स्तर पर मनोवैज्ञानिक समस्यायें जैसे हीन–भावना, समायोजन, प्रेरणा का अभाव, तीव्र सांवेगिता, मानसिक द्वन्द्व आदि किस सीमा तक तथा किस प्रकार स्त्री शिक्षा को बाधित कर रही है। इसको ज्ञात करना प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।

परिकल्पनायें–

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से दो परिकल्पनाओं पर आधारित है।

1. स्त्री शिक्षा की माध्यमिक स्तर पर मनोवैज्ञानिक समस्यायें लिंग भेद के कारण उत्पन्न छात्राओं की चिन्ताओं, आशंकाओं, असुरक्षा की भावनाओं और सामंजस्य के अभाव से सम्बधित नहीं है।
2. इस स्तर पर उनकी शिक्षा की समस्यायें जीवन में उनकी भूमिकाओं की सामाजिक आवधारणाओं से सम्बद्ध नहीं हैं।

जनसंख्या एवं न्यादर्श–

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये 600 माध्यमिक स्तर की छात्राओं को जनसंख्या के लिये चुना गया था। इन सभी माध्यमिक विद्यालयों से कुछ छात्राओं को चुना गया। इन सभी का चुनाव यादृच्छिक क्रम से किया गया जिसमें विभिन्न जातियों, धर्मों की छात्रायें थी।

उपकरण–

आकड़ों के संकलन के लिये श्रीमती शीला रानी यादव द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया एवं साक्ष्त्कार एवं निरीक्षण का भी प्रयोग किया गया।

सांख्कीय विश्लेषण एवं विधियाँ–

आकड़ों के विश्लेषण के लिये मध्यमान,मानक विचलन एवं CR-परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्राप्तियाँ–

अध्ययन की प्राप्तियों को निम्न तीन खण्डों में विभक्त किया गया है।

खण्ड–अ

मनावैज्ञानिक समस्यायें–

अध्ययन के स्पष्टीकरण के लिये छात्राओं की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अलग से अध्ययन किया गया है और पाया गया कि प्रस्तुत अध्ययन में चुने गये विभिन्न मापदण्ड माध्यमिक स्तर के छात्राओं की मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर भी प्रभाव डालते है।

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रो में निवास करने वाली छात्राओं की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली छात्रायें, शहरी क्षेत्रों में निवासकरने वाली छात्राओं में मनोवैज्ञानिक समस्यायें समान पायी गयी। उनकी समस्याओं में सार्थकता .01 एवं .05 पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

2. उच्च जाति की अपेक्षा पिछड़ी जाति की छात्रायें मनोवैज्ञानिक रूप से अधिक समस्याग्रस्त पायी गयी। इनका CR–मूल्य 29.43 जो दोनों की समस्याओं के सार्थक अन्तर को दर्शाता है। पिछड़ी और अनुसूचित जाति की छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया इसका CR–मूल्य 1.13 पाया गया। इसी प्रकार पिछड़ी जाति और अनुसूचित जाति की छात्राओं मेंसार्थक अन्तर पाया गया इसका CR–मूल्य 10.55 है।
3. प्रस्तुत अध्ययन मेंधर्म के आधार पर भी अध्ययन किया गया और पाया गया कि धर्म छात्राओं की मनोवैज्ञानिक समस्याओं को प्रभावित नहीं करता है। इसका CR–मूल्य 1.19 पाया गया।
4. संयुक्त एवं एकल परिवार की मनोवैज्ञानिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया इनका CR–मूल्य .42 आया अर्थात संयुक्त परिवार की छात्राओं एकल परिवार की छात्राओं से मनोवैज्ञानिक रूप से समान समस्याग्रस्त हैं।
5. पिता के व्यवसाय का भी प्रभाव छात्राओं के मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर पड़ता है। नौकरी करने वाले एवं व्यापार,करने वालों की छात्राओं के मनोवैज्ञानिक समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया इसका CR–मूल्य 4.95 आया। व्यापार और खेती करने वालों की छात्राओं की मनोवैज्ञानिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया इसका CR–मूल्य 1.45 आया इसी प्रकार नौकरी एवं खेती करने वालो की छात्राओं में सार्थक अन्तर पाया गया इनका CR–मूल्य 8.38 पाया गया।
6. अविवाहित एवं विवाहित छात्राओं की मनोवैज्ञानिक समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया इनका CR–मूल्य 4.04 पाया गया। खण्ड–ब

सामाजिक समस्यायें–

मनोवैज्ञानिक समस्याओं की ही तरह सामाजिक समस्यों पर भी विभिन्न मानदण्डों का स्पष्ट प्रभाव देखा गया–

1. निवास स्थान के आधार पर छात्राओं की सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया आर्थात ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली छात्राये शहरी क्षेत्रों में निवासकरने वाली छात्राओं की सामाजिक समस्यायें लगभग समान हैं।
2. उच्च जाति एवं पिछड़ी जाति की छात्राओं की सामाजिक समस्याओं का CR–मूल्य 3.93 आया इनकी सामाजिक समस्याओं मेंसार्थक अन्तर है। पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं में सार्थक अन्तर पाया गया इसका CR–मूल्य 12.71 आया और उच्च जाति और अनुसूचित जाति की छात्राओं में सार्थक अन्तर है इसका CR–मूल्य 12.42 आया।
3. हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म की छात्राओं में सार्थक अन्तर पाया गया इसका CR–मूल्य 7.07 है।
4. संयुक्त एवं एकल परिवार की सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया जिसका CR–मूल्य 5.11 है। जो .01 औश्र .05 स्तर पर सार्थक अन्तर स्पष्ट रूप से दर्शाता है।
5. नौकरी तथा व्यापार करने वालों की छात्राओं के सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है इसका CR–मूल्य 4.59 है इसी प्रकार व्यपार एवंखेती करने वालो की छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया

इसका CR–मूल्य 1.45 है तथा नौकरी तथा खेती करने वालो की छात्राओं में सार्थक अन्तर पाया गया जिसका CR–मूल्य 8.38 है।

6. अविवाहित एंव विवाहित छात्राओं की सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया इनका CR–मूल्य 5.47 है। अविवाहित छात्राओं की अपेक्षा विवाहित छात्रायें सामाजिक रूप से अधिक समस्याग्रस्त पायी गयी। खण्ड–स

मनो–सामाजिक समस्यायें–

प्रस्तुत अध्ययन में छात्राओं की मनो–सामाजिक समस्याओं में अन्तर पाया गया विभिन्न मापदण्डों जैसे धर्म पिता का व्यवसाय, जाति, अविवाहित एवं विवाहित आदि के आधार पर मुख्यतः स्त्री शिक्षा की समस्याओं में सार्थक एवं निरर्थक अन्तर पाये गयें–

1. निवास स्थान के आधार पर छात्राओं के मनो–सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया गया और पाया गया कि ग्रामीण और शहरी में निवास करने वाली छात्राओं की मनोसामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है। जिसका CR–मूल्य 3.29 है।
2. उच्च जाति एवं पिछड़ी जाति की छात्राओं में सार्थक अन्तर है इसका CR–मूल्य 19.94 है। पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं का CR–मूल्य 12.69 है। जो यह दर्शाता है कि इनकी मनो–सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है। उच्च जाति एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं में भी मनो–सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है इनका CR–मूल्य 19.05 है।

3. हिन्दू धर्म तथा इस्लाम धर्म की छात्राओं का CR–मूल्य 1.91 है। जो सार्थक अन्तर को नहीं दर्शाता है इस मूल्य से स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म की मनो–सामाजिक समस्यायें लगभग समान हैं।
4. संयुक्त एवं एकल परिवार की मनोसामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं हैं। इसका CR–मूल्य .003 आया। अर्थात दोनों की समस्यायें समान हैं।
5. नौकरी तथा व्यवसाय करने वाले अभिभावकों की छात्राओं का CR–मूल्य 9.68 आया जो यह दर्शाता है कि नौकरी तथा व्यापार करने वाली छात्राओं के मनोसामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है व्यापार तथा खेती करने वाले अभिभावकों की छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं है इसका CR–मूल्य .21 है। जो यह दर्शाता है कि दोनों की मनो–सामाजिक समस्यायें समान हैं। नौकरी तथा खेती करने वाले अभिभावकों की छात्राओं का CR–मूल्य 19.82 है अर्थात दोनों की मनो–सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है।
6. अविवाहित तथा विवाहित छात्राओं का CR–मूल्य 4.04 है। छात्राओं की वैज्ञाहिक स्थिति के आधार पर भी छात्राओं की मनो–सामाजिक समस्यायें प्रभावित करती हैं।

निष्कर्ष–

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर निम्नलिखिता निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं– माध्यमिक स्तर पर स्त्री शिक्षा की उन्नति के मार्गों में अनेकों समस्यायें बाधक हैं–

1. छात्राओं की मनो–वैज्ञानिक समस्याओं को विभिन्न मापदण्डों जैसे निवास स्थान, जाति, धर्म, परिवार का स्वरूप, अभिभावकों का व्यवसाय, वैवाहिक स्थिति आदि मापदण्डों पर मनोवैज्ञानिक समस्याओं का स्पष्ट प्रभाव दिखायी पड़ता है।
2. माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की सामाजिक समस्याओं पर भी सामाजिक कारकों का विभिन्न मापदण्डों पर इनका प्रभाव देखा गया।
3. छात्राओं की मनो–सामाजिक समस्याओं पर भी विभिन्न मापदण्डों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ा।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट हो रहा है कि माध्यमिक स्तर पर स्त्री शिक्षा पर मनो–सामाजिक समस्यायें अपना स्पष्ट प्रभाव डाल रही है जिसके कारण स्त्री शिक्षा बाधित हो रही है।

शैक्षिक उपयोगिता–

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर स्त्री शिक्षा की समस्याओं को दूर करने के लिये निम्नलिखित सुझाव दिये गये हैं–

1. छात्राओं द्वारा अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान किये जाने का प्रयास किया जाना चाहिये।
2. अभिभावकों को बालिकाओं की शिक्षा के दृष्टि कोण में परिवर्तन करने का प्रयास करना चाहिए बालकों के समान बालिकाओं की भी शिक्षा की भावी व्यवस्था करने का प्रयास करना चाहिए।
3. शिक्षकों, प्राध्यापकों एवं प्रशासकों द्वारा स्त्री शिक्षा को उन्नतिशील बनाये जाने के लिये अपने–अपने क्षेत्रों में सक्रिय प्रयास किया जाना चाहिए।

4. दूरदर्शन पर इस प्रकार के कार्यक्रम दिखाये जाय जिससे बालिकायें स्वयं अपने मनोबल को ऊँचा कर सके और मनो–सामाजिक समस्याओं से जूझने की शक्ति उत्पन्न कर सकें।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में नाटकों और काव्य गोष्ठियों के माध्यम से ऐसे कार्यक्रम दिखायें जाने चाहिए जिससे छात्रायें शिक्षा के प्रति स्वयं जागृति हो सकें। और अभिभावका अज्ञानता के अंधकार से बाहर आ सके।
6. सरकार द्वारा बालिका विद्यालयों की स्थापना तथा प्रशिक्षित अध्यापिकाओं की नियुक्ति का प्रयास करना चाहिए।
7. सरकार द्वारा बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा के साथ–साथ अनेक रोजगार परक कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देना चाहिए जिससे बलिकायें भविष्य में आत्मनिर्भर बन सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. Gayatri: Vibhinn Vyavasayarat mahilaon Daswapraty (Self-Concept of womenin Different occupations) Ph.D. Psy., Kashi Vidyapith, Varanasi, 1980 inBuch M.B. (ed). Third Sarvey of Research in Education, NCERT, New Delhi, 1986, pp. 127-128.
2. Thankkar DN "Development of femal Edu. in Gujarat After Independence"Ph.D. Edu. Gujarat Vidyapith (1976) citedin M.B. Buch Survey 11 vol pp. 65.
3. Gondhalakar A: Y, "Objectives of women's Education as perseived by the student and their parents, Ph.D., Soc, SNDT (1975) citedin M.B. Buch, Education on al research survey vol III, pp. 126.
4. B.G. Sudh: K.L.V, Thirta: "Problems of adolesent Girls in Relation to their community & Relehion" Dep. of Edu, B.H.U. 1977. cited in educational Reserch Survey by M.B. Buch, pp. 225.
5. Buch M.B. Educational Research Sarvey vol II. pp. 479.
6. U Basu. "Femal Education in Bihar form 1904 A.D. to the present day," Ph.D. Edu. pat U. 1975, cited in M.B. Buch vol II, pp. 43

7. Desain "Girls Access to school Edu. in Gujarat sate a study of factors and problems in historical perspective Ph.D. Edu. Bombay U (1976) cited" in M.B> Buch vol II, pp. 45".
8. C.D. Desai: "Giral Access to School Education in Gujarta state A study of factors & Problems in Historical perspective." Ph.D. Edu, Bombay U. 1976 cited in Educationa Recearch Survey vol II by M.B. Buch, pp. 45.
9. Buch Suryey of 5th vol II (1988-92).
10. अग्निहोत्री, रवीन्द्र, आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्यायें और समाधान, राजस्थान, हिन्दी ग्रनथ अकादमी, जयपुर, 1987।
11. उल्लेकर, ए0एस0,दी पोजीशन आफ हिन्दू वीमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिसर्स, वाराणसी।
12. कपूर, प्रमिला, सोशियों–एकोनामिक स्टडी आफ चेन्ज इन एटीट्यूड आफ एजूकेटेड अरनिंग हिन्दू वीमेन, आगरा विश्वविद्यालय,आगरा, 1960।
13. कोल, वीना, स्टडी आफ एडजस्टमेंट आफ की मैन इन इम्प्लायमेंट, डी0 फिल0 थीसिस इन साइकोलाजी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, 1973।
14. क्रिश्चियन, जे0ए0 (1977) इण्डियन एजुकेशनल रिवीव,जून (1979),पृ0 88।
15. खन्ना, गिरिजा एण्ड अदर्स,आब्जेक्टिव्स आफ वीमेन एजुकेशन एज परसीब्ड बाई स्टूडेन्ट एण्ड पैरेन्ट्स पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, नई दिल्ली, 1978।